पत्रिका

राष्ट्रीय राजस्थानी परिसंवाद सम्पन्न

'यहां की भक्ति मन और चित्त में करती है भेद'

पत्रिका लाइव रिपोर्ट

डूंगरपुर @ पत्रिका. राजस्थानी भक्ति परम्परा अपने आप में अद्भुत है। यह मन एवं चित्त में भेद करती है। मन का संबंध संकल्प से और चित्त का संबंध चेतना से जुड़ा हुआ है। मनुष्य का अहंकार जब शून्य हो जाता है, तब उसका मन निर्मल हो जाता है और मन की निर्मलता ही भक्ति है।

ये विचार कवि, आलोचक प्रोफेसर डा. अर्जुनदेव चारण ने साहित्य अकादमी एवं राजस्थान बाल कल्याण समिति के संयुक्त तत्वावधान में शनिवार को हुए राजस्थानी भक्ति परम्परा एवं वागड़ अंचल विषयक परिसंवाद में शनिवार को यहां एक निजी सभागार में व्यक्त किए। उन्होंने भारतीय एवं राजस्थानी भक्ति परम्परा की विशद विवेचना करते हुए महर्षि नारद को सबसे बड़ा भक्त बताकर उनकी भक्ति-साधना को उजागर किया।

मुख्य अतिथि उपेंद्र अणु ने कहा कि राजस्थान में वागड़ अंचल की भक्ति परम्परा बहुत प्राचीन एवं गौरवशाली रही है, जिसमें मावजी महाराज, गोविंद गुरु एवं गवरी बाई का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। विशिष्ट अतिथि राजस्थान बाल कल्याण समिति के निदेशक मनोज गौड़ ने कहा कि मातृभाषा राजस्थानी एवं इस भाषा में रचे गए साहित्य को उजागर करना हमारा कर्तव्य है। मातृभाषा एवं साहित्य हमारी अस्मिता से जुड़ा हुआ है।

उद्घाटन समारोह के आरम्भ में साहित्य अकादमी के उपसचिव डा. देवेन्द्र कुमार देवेश ने स्वागत किया। राष्ट्रीय राजस्थानी परिसंवाद के संयोजक हर्षवर्द्धन सिंह राव ने प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। संचालन दिनेश प्रजापति ने किया।

डूंगरपुर. राष्ट्रीय राजस्थानी परिसंवाद कार्यशाला को संबोधित करते अतिथि।

डूंगरपुर. साहित्य अकादमी के परिसंवाद कार्यशाला में मौजूद साहित्यकार।

'स्व के बजाय लोक कल्याण'

समापन समारोह में प्रतिष्ठित कवि कथाकार दिनेश पंचाल ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि वागड़ की भक्ति परम्परा प्रेम एवं समर्पण की है, जिसमें सकल भाव स्व के बजाय लोक कल्याण का है। मुख्य अतिथि वागड़ अंचल के वयोवृद्ध रचनाकार ज्योतिपुंज ने कहा कि वागड़ की भक्ति परम्परा भारतीय सनातन भक्ति परम्परा से जुड़ी हुई है, जो मानवता का पर्याय है। यह प्रत्येक मानव के मन में प्रकृति संरक्षण, जीवदया एवं लोक कल्याण का भाव जाग्रत करती है। इस दौरान वागड़ के प्रतिष्ठित लेखक भोगीलाल पाटीदार को साहित्य अकादमी का बाल साहित्य पुरस्कार की घोषणा पर अभिनन्दन किया। संचालन रामचन्द्र भारती ने किया।

साहित्यिक सत्र में चर्चा

एमएलएसयू के राजस्थानी विभागाध्यक्ष डा. सुरेश कुमार सालवी की अध्यक्षता में दो साहित्यिक सत्र हुए। इसमें राजेंद्र पंचाल ने कृष्ण भक्ति परम्परा एवं वागड़ अंचल, सतीश आचार्य ने राम भक्ति परम्परा एवं वागड़ अंचल, घनश्याम सिंह भाटी ने राजस्थानी भक्ति परम्परा एवं कल्लाजी महाराज एवं डा. रेखा खराड़ी ने राजस्थानी आदिवासी भक्ति साहित्य विषय पर अपना आलोचनात्मक आलेख प्रस्तुत किया। संचालन सूर्यकरण सोनी ने किया।

ये हुए शामिल

डा. गजेसिंह राजपुरोहित, डा. सुनिल पण्ड्या, डा. प्रवीण पण्ड्या, डा. मनोहरसिंह राव, डा. [illegible], भारती जोशी, महेश देव नन्दीश, ओंकारनाथ पंचाल, जगदीश गुर्जर, राजेन्द्र सिंह चौहान, हिमांशु चौबीसा, गिरीश पानेरी, वीरेंद्र सिंह बेड़सा, विपुल विठोजी, डा. प्रियंका चौबीसा, अनिल पंचाल, राधेश्याम पाटीदार, अनिल लौहार, तुलसी कोटेड़, हेमन्त शर्मा, लोकेश जोशी, राजकुमार कंसारा, मंजुला पण्ड्या, ममता पांचाल, बलबीर सिंह राव, नारायण स्वर्णकार, करणीसिंह राव एवं वासुदेव सुथार आदि शामिल हुए। कार्यशाला में साहित्य सृजन पर चर्चा की।